भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 3350

17दिसम्बर, 2021को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धति

3350.डॉ. जयंत कुमार राय:

श्री विनोद कुमार सोनकरः

श्री भोला सिंहः

डॉ. सुकान्त मजूमदारः

श्री राजा अमरेश्वर नाईकः

श्रीमती संगीता कुमारी सिंह देवः

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के फार्मूले की चोरी कर पूरे विश्व में हजारों मरीजों का पंजीकरण किया गया है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और इस पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है;

(ग) क्या सरकार ने भारतीय औषधि प्रणालियों और देश की विरासत के प्राचीन और पारंपरिक ज्ञान की रक्षा के लिए पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल) की स्थापना की है;

(घ) यदि हां, तो इसकी मुख्य विशेषताएं क्या हैं और इसके कार्यान्वयन की स्थिति क्या है;

(ड.) उक्त योजना के तहत आवंटित और जारी की गई राशि कितनी है; और

(च) क्या स्वदेशी औषधीय प्रणालियों के प्राचीन और पारंपरिक ज्ञान की रक्षा के लिए सरकार द्वारा अन्य उपाय किए जा रहे हैं?

उत्तर

आयुष मंत्री (श्री सर्बानंद सोनोवाल)

(क): पारंपरिक भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के फार्मूले चुराकर विश्व भर में पंजीकृत हजारों रोगियों के बारे में कोई तथ्यात्मक/मात्रात्मक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

(ख) और (ग): पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (टीकेडीएल), दुनिया भर में पेटेंट कार्यालयों में भारतीय पारंपरिक ज्ञान का अनुचित लाभ उठाने से रोकने और उसकी रक्षा के लिए वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय के साथ संयुक्त रूप से 2001 में शुरू की गई एक अग्रणी पहल है।टीकेडीएल को यूनाइटेड स्टेट्स पेटेंट एंड ट्रेडमार्क ऑफिस (यूएसपीटीओ) द्वारा प्रदान किए गए हल्दी और बासमती पेटेंट और यूरोपीय पेटेंट ऑफिस (ईपीओ) द्वारा दिए गए नीम पेटेंट को सफलतापूर्वक रद्द करने के लिए भारत द्वारा किए गए प्रयासों की अगली कड़ी के रूप में शुरू किया गया था।

(घ): टीकेडीएल में आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और सोवा रिग्पा से संबंधित शास्त्रीय/पारंपरिक पुस्तकों से चिकित्सा पद्धतियों से संबंधित भारत के समृद्ध पारंपरिक ज्ञान के साथ-साथ योग की पद्धतियां भी शामिल हैं।स्थानीय भाषाओं जैसे संस्कृत, हिंदी, अरबी, फारसी, उर्दू, तमिल, भोटी आदि में मौजूद चिकित्सा और स्वास्थ्य के प्राचीन ग्रंथों से प्राप्त सूचनाओं को पूर्व कला के रूप में टीकेडीएल डाटाबेस में पांच अंतरराष्ट्रीय भाषाओं यथा,अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश और जापानी में डिजिटाइज्ड किया गया है।

कुल 404982 औषध-योगों को अब तक टीकेडीएल डाटाबेस में लिखा जा चुका है जिनमेंआयुर्वेद के117205, यूनानी के 233801, सिद्ध के47210, योग के4070 और सोवा रिग्पा के 2696 औषध-योग शामिल हैं।

मौजूदा अनुमोदनों के अनुसार, डेटाबेस की पहुंच दुनिया भर में उन्हीं पेटेंट कार्यालयों को दी गई है जिन्होंने सीएसआईआर के साथ गैर-प्रकटीकरण पहुंच समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं।भारतीय पेटेंट कार्यालय (पेटेंट, डिजाइन और व्यापार चिह्न महानियंत्रक), यूरोपीय पेटेंट कार्यालय, अमेरिकी पेटेंट कार्यालय, जापानी पेटेंट कार्यालय, जर्मन पेटेंट कार्यालय, कनाडा पेटेंट कार्यालय, चिली पेटेंट कार्यालय, ऑस्ट्रेलियाई पेटेंट कार्यालय, ब्रिटेन पेटेंट कार्यालय, मलेशियाई पेटेंट कार्यालय, रूसी पेटेंट कार्यालय, पेरू पेटेंट कार्यालय, स्पेनिश पेटेंट और ट्रेडमार्क कार्यालय और डेनिश पेटेंट और ट्रेडमार्क कार्यालय सहित चौदह पेटेंट कार्यालयों को टीकेडीएल डेटाबेस तक पहुंच प्रदान की गई है।

सीएसआईआर-टीकेडीएल इकाई, टीकेडीएल साक्ष्यों के आधार पर हमारे पारंपरिक ज्ञान से संबंधित पेटेंट आवेदनों पर तीसरे पक्ष की टिप्पणियों और अनुदान से पूर्व विरोध को भी दर्ज करती है। अब तक, 245 पेटेंट आवेदनों को या तो वापस ले लिया गया है/वापस मान लिया गया है या संशोधित किया गया है या टीकेडीएल साक्ष्यों के आधार पर अलग रखा गया है, इस प्रकार भारतीय पारंपरिक ज्ञान की रक्षा की जा रही है।

(ड.): टीकेडीएल, सीएसआईआर के तहत परियोजनाओं के माध्यम से कार्यान्वित की जाती है। वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान टीकेडीएल के लिए आवंटित राशि 1141.350 लाख रुपये है।

(च): आईपीआर की सुरक्षा, आयुष मंत्रालय द्वारा विदेशी संस्थानों के साथ स्वायत्त निकायों (मंत्रालय के अधीन) में हस्ताक्षरित एमओयू का एक अभिन्न हिस्सा है। सीएसआईआर-टीकेडीएल इकाई, दिल्ली ने पीबीआर से सूचना को टीकेडीएल डाटाबेस में शामिल करने की संभावना के तौर-तरीकों के मूल्यांकन और पहचान के लिए राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण के साथ एक गैर-प्रकटीकरण समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

*****